राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित महात्मा गाँधी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ० आश्वती वर्मा

प्राचार्य, नजरूल हसन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, सोनीहार, खगड़िया, बिहार

सार

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और नयाय पूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। गुणवतापूर्ण शिक्षा तक सार्वजनिक पहुँच प्रदान करना शैक्षिक वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुँजी है। रोजगार और वैश्विक परिस्थितिक में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों की वजह से यह जरूरी हो गया है कि बच्चे को जो कुछ सिखाया जा रहा है, उसे तो सीखे ही और साथ ही वह सतत् सीखते रहने की कला भी सीखे। इसीलिए शिक्षा में विषय वस्तु को बढ़ाने की जगह जोर इस बात पर अधिक दिया कि बच्चे समस्या समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सूचना सीखे, विविध विषयों के बीच अंत संबंधों को देख पाए, कुछ नया सोच पाए और नई जानकारी को नई और बदलती परिस्थितियाँ या क्षेत्रों में उपयोग में ला पाए। जरूरत है कि शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केंद्रित हो, जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित हो, लचीली हो और समयता और समन्वित रूप से देखने समझने में सक्षम बनाने वाली और अवश्य ही रूचिपूर्ण हो। आधुनिक भारत की इमारत मोहनदास करमचंद गाँधी पर टिकी हुई है। उनके विचार सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक थे। उन्होंने भारतीय मूल्यों, नैतिकता और रीति-रिवाजों के आधार पर जीवन का एक दर्शन निर्धारित किया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश उपनिवेशवाद बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त अज्ञानता और अंधविश्वास से लड़ने के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उनके लिए राजनीतिक मुक्ति केवल बेड़ियों का गायब होना था। भारत को मन की बंधी बेड़ियों से मुक्त करने की जरूरत है। उन्होंने सोचा कि केवल शिक्षा ही राष्ट्र को आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है। उनके शिक्षा दर्शन का उद्देश्य ना केवल स्वराज बल्कि सर्वोदय भी था।

शब्द कुँजी: राष्ट्रीय एकीकरण,सांस्कृतिक संरक्षण, नैतिकता,सामाजिक न्याय,समानता,आध्यात्मिक, बौद्धिक विकास

प्रस्तावना:

हाल ही में भारत को एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मिली है। आधुनिक शैक्षिक विचारधाराओं के कई पहलुओं के अलावा, यह शिक्षा पर गाँधीवादी विचारों को भी याद दिलाता है। प्रस्तावित अध्ययन का उद्देश्य महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का पता लगाना और यह दिखाना है कि इन विचारों पर हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कैसे बनी है। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आधुनिक भारत की इमारत मोहनदास करमचंद गांधी पर टिकी हुई है। उनके विचार सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक थे। उन्होंने भारतीय मूल्यों, नैतिकता और रीति-रिवाजों के आधार पर जीवन का एक दर्शन निर्धारित किया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश उपनिवेशवाद बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त अज्ञानता और अंधविश्वास से लड़ने के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान का एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उनके लिए राजनीतिक मुक्ति केवल बेड़ियों का गायब होना था। भारत को मन की बंधी बेड़ियों से मुक्त करने की जरूरत है। उन्होंने सोचा कि केवल शिक्षा ही राष्ट्र को आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है। उनके शिक्षा दर्शन का उद्देश्य ना केवल स्वराज बल्कि सर्वोदय भी था।

शिक्षा वह सीढ़ी है जिसपर चढ़कर मानव सभ्य और सुसंस्कृत बनता है। हमारे भारतवर्ष में अनेक शिक्षा शास्त्री हुए हैं उनमें से हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी आज भी प्रासंगिक है।

इनका हमारी शिक्षा व्यवस्था से गहरा संबंध रहा है। हमारी नई शिक्षा नीति में जो बदलाव या परिवर्तन हुए है या होने जा रहे हैं उनमें महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का प्रभाव झलकता है क्योंकि जो विचार हमारे शिक्षाविद्ों ने वर्षों पूर्व ही बता दिये थे वही आज की शिक्षा नीति में लागू करने योग्य है। यही तो हमारी नई शिक्षा नीति है जो कि पुरातन व नवीन का समागम कही जा रही है।

शिक्षा की परिभाषाएँ विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से दिए हैं, जिनमें से कुछ विद्वानों की परिभाषाएँ इस प्रकार से है:

1. महात्मा गाँधी के अनुसार, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूपों को प्रस्फुटित करे।
2. अरस्तु के अनुसार, "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क की रचना की शिक्षा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्याय पूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। गुणवतापूर्ण शिक्षा तक सार्वजनिक पहुँच प्रदान करना शैक्षिक वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत् प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। रोजगार और वैश्विक परिस्थितिक में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों की वजह से यह जरूरी हो गया है कि बच्चे को जो कुछ सिखाया जा रहा है, उसे तो सीखे ही और साथ ही वह सतत् सीखते रहने की कला भी सीखे। इसीलिए शिक्षा में विषय वस्तु को बढ़ाने की जगह जोर इस बात पर अधिक दिया कि बच्चे समस्या समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सूचना सीखे, विविध विषयों के बीच अंतर संबंधों को देख पाए, कुछ नया सोच पाए और नई जानकारी को नई और बदलती परिस्थितियाँ या क्षेत्रों में उपयोग में ला पाए। जरूरत है कि शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केंद्रित हो, जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित हो, लचीली हो और समयता और समन्वित रूप से देखने समझने में सक्षम बनाने वाली और अवश्य ही रूचिपूर्ण हो। 2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए जो कि किसी से पीछे नहीं हो। एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जहाँ किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध है। शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए बहुत आवश्यक है। इसीलिए यह जरूरी है कि शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए वक्त के साथ शिक्षा नीति में भी बदलाव किया जाता रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी समय की मांग और जरूरत के हिसाब से देश की शिक्षा वयवस्था को प्रभावी बनाए रखने के लिए लाई गई है। शिक्षा नीति में बदलाव 34 वर्ष बाद हुआ है। इससे पहले 1968 और 1966 के बाद यह तीसरी बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव हुआ है। नई शिक्षा नीति का मसौदा इसरो प्रमुख रह चुके डॉक्टर के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में तैयार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रधानमंत्री नरेंन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा मंजूरी मिलने पर इसे लागू किया गया है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत में स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी सुधारों का मार्ग प्रशस्त करना है। साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय को अब शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जाएगा। पहले मानव संसाधन मंत्रालय के अंतर्गत शिक्षा नीति को चलाया जाता था, लेकिन नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के बाद इस मंत्रालय के नाम को बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया। यह नीति उच्च शिक्षा को अपनी भाषा में पढ़ने की स्वतंत्रता देने के साथ ही बच्चों को कला और खेलकूद के क्षेत्र में बढ़ावा देती है। इस नीति के अंतर्गत सरकार के द्वारा कई महत्वपूर्ण लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, जिसमें वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात को 100 प्रतिशत तक लाना है। शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्र व राज्य सरकार की मदद से जीडीपी का 6 प्रतिशत व्यय करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शैक्षिक संरचना को 5+3+3+4 में डिजाइन किया गया है।

गाँधी शिक्षा को व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार मानते थे और मनुष्य की किसी भी प्रकार की भौतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए उसे उतना ही आवश्यक मानते थे जितना बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध। यही

कारण है कि उन्होंने एक निश्चित आयु तक के बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करने पर बल दिया और उसे नि:शुल्क करने की बात कही। उनका स्पष्ट मत था कि यह शिक्षा विदेशी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से नहीं दी जा सकती, यह शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही दी जा सकती है। वैसे भी वे अंग्रेजी को मानसिक दासता बढ़ानेवाली भाषा मानते थे। वे शिक्षा के द्वारा मनुष्य को स्वावलंबी बनाना चाहते थे, उसे अपनी रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने हस्त कौशलों की शिक्षा पर विशेष बल दिया। साथ ही मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य को एकादश व्रत: सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, कायिक श्रम, सर्वधर्म सम्भाव और विनम्रता पालन करने की और प्रवृत्त करने पर बल दिया। गाँधी जी ने अपने इस शिक्षा दर्शन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बेसिक शिक्षा का नाम दिया।

अध्ययन का औचित्य:

प्रस्तुत अध्ययन का यदि औचित्यपूर्ण तरीके से देखा जाए तो शिक्षक को न केवल किसी विषय की सैद्धांतिक और व्यावहारिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। जब इस बात की आवश्यकता है कि भारतीय शिक्षा का नवीन स्वरूप इस तरह से व्यवस्थित किया जाए जो भारतीय संस्कृति के सिद्वांतो का समावेश करते हुए भौतिकवाद की तरह उन्मुख हो क्योंकि हमें दोनों की आवश्यकता है। आज की इस भोगविलास की अंधी दौड़ में इस बात की प्रबल आवश्यकता है कि अपनी संस्कृति को बचाए रखकर ऐसा ज्ञान अर्जन करें जो कि रोजगार परक हो, अर्थात् शिक्षा स्वावलंबी भी हो। बदली परिस्थितियों में ज्ञान के साधक अब इतने नहीं रहे जो मात्र शिक्षा के लिए पढ़ रहे हों। परंतु दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि हमारे देश की शिक्षा पद्धति ज्ञान और जीवन की खाई को नहीं बांट सकी है और फिर भी लोग अच्छी शिक्षा के लिए ललायित है। 90 प्रतिशत छात्रों को पढ़ने के पीछे अच्छा रोजगार प्राप्त करने का उद्देश्य है।

शैक्षिक दर्शन:

शैक्षिक प्रशासन से तात्पर्य उन विचारों एवं सिद्धांतों से होता है जो किसी भी देश की शिक्षा संबंधी नीति को प्रभावित करते और निश्चित रूप देते हैं।

प्रासंगिकता: प्रासंगिकता का अर्थ है कि कोई सूचना, क्रिया या चीज किसी मामले या मुद्दे से कितना संबंधित है।

शोध के उद्देश्य :

1. गाँधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन करना।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर गाँधीवादी शैक्षिक विचारों के प्रभाव का अध्ययन।
4. गाँधीजी के विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन की विधि:

1. प्रस्तावित अध्ययन एक विश्लेषणात्मक अध्ययन है।
2. यह एक दस्तावेज प्रकार का गुणात्मक शोध है।
3. अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक विधि का सहारा लिया गया है।
4. वर्तमान समय में गाँधीजी के शैक्षिक विचारों और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल्यांकन करने के लिए संश्लेषण एवं विश्लेषण विधि का सहारा लिया गया है।

अध्ययन का स्रोत:

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय क्षेत्र ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक स्वरूप से संबंधित है, जिसके अंतर्गत प्रमुख भारतीय विचारक महात्मा गाँधी के शैक्षिक चिंतन और शैक्षिक दर्शन के तथ्यों को संकलित करने व खोजने के लिए ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है। वर्तमान समय गाँधी जी के शैक्षिक विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल्यांकन करने के लिए सश्लेषण एवं विश्लेषण विधि का सहारा लिया गया है। वर्णनात्मक शोध विधि है जो किसी घटना की जनसंख्या का वर्णन करती है। यह मात्रात्मक और गुणात्मक विधि का उपयोग करता है। वर्णनात्मक शोध समस्या का सटीक वर्णन है बिना यह पूछे कि कोई विशेष घटना क्या हुई? बाजार के पैटर्न पर शोध करके वर्णनात्मक पद्धति यह बताती है कि

परिवर्तन क्यों हुआ? इस पर रहने की वजह पैटर्न कैसे बदलते हैं? परिवर्तन का कारण क्या है और परिवर्तन कब हुआ?

1. इस शोध कार्य में शोध के प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोतों का ही प्रमुख योगदान है। इनके आधार पर निम्न विधियों का प्रयोग शोध में किया गया है।

2. पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों का अध्ययन जिनमें विभिन्न पाठय पुस्तकें वार्षिक पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें एवं पत्रावलियाँ आदि सम्मिलित है।

3. समय-समय पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं द्वारा अध्ययन जिनमें वार्षिक पत्रिकाएँ, मासिक पत्रिकाएँ, पाक्षिक पत्रिकाएँ, अन्तर्राष्ट्रीय शोध सारांश एवं राष्ट्रीय पत्रिकाएँ आदि सम्मिलित हैं।

4. लघु शोध एवं शोध ग्रंथों का अध्ययन भी सूचना प्राप्ति का साधन है।

5. सूचना तकनीकी के माध्यम से, जिनमें इन्टरनेट एवं टेलीविजन के द्वारा नवीनतम सूचनाओं का संग्रह सम्मिलित है, जिससे शोध को नवीनतम स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान अध्ययन के परिणामस्वरूप गाँधी जी के शैक्षिक विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रगति विशेष रूप से शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा।

शिक्षा के उद्देश्य:

गाँधीजी के विचार से मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति है। शिक्षा और उसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में गाँधी जी ने जो विचार व्यक्त किए हैं उनको हम निम्नलिखित क्रम में अभिव्यक्त कर सकते हैं-

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास
3. सामाजिक विकास
4. नैतिक एवं चारित्रिक विकास
5. सांस्कृतिक विकास
6. व्यावसायिक विकास
7. आध्यात्मिक विकास

इस प्रकार गाँधीजी ने अपने शैक्षिक विचारों का प्रसार कर बुनियादी शिक्षा के माध्यम से भारत को एक सशक्त तथा आदर्श शिक्षा की देन दी।

गाँधीवाद की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. **सत्य:** पूर्वाग्रह से दूषित न होना, सत्य को सदा मानना, असत्य से दूर हटना, असत्य से वापस लौटने में भय या लज्जा न होना और सत्य के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देना।
2. **अहिंसा:** प्रत्येक प्रकार के अधर्म का पशुबल से नहीं वरन् आत्मबल से विरोध करना। अहिंसा एक क्रियात्मक और भावना-प्रधान प्रवृत्ति है।
3. **सेवा:** जनता की सीधी और प्रत्यक्ष सेवा के कार्यक्रम पर अमल करना। जनसाधारण को शोषण से मुक्त करना।
4. **अस्पृश्यता का प्रभाव:** छुआछूत का विचार समाप्त होना चाहिए। सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं और सभी को प्रगति का अवसर मिलना चाहिए।
5. **आध्यात्मिकता:** गाँधीवाद आध्यात्मिकता का दर्शन है। यह कोरा आर्थिक या सामाजिक दर्शन नहीं है। इसमें ईश्वर पर विश्वास, आत्मबल की जागृति, आत्मा का उन्नयन और परमात्मा के साक्षात्कार के तत्व निहित हैं।
6. **देश-सेवा:** देश की सेवा के लिए तन, मन और धन से जीवन को अर्पित करना और तदर्थ स्वार्थ का परित्याग करना।
7. **चारित्रिक दृढ़ता** गाँधीवाद में चारित्रिक दृढ़ता पर बल है। गाँधीजी के सम्पर्क में रहने वाले व्यक्ति अपने चरित्र को उत्तरोत्तर उन्नत करते जाते थे।
8. **साधन की पवित्रता:** गाँधीवाद में साधन की पवित्रता पर ध्यान दिया जाता है। अपवित्र साधनों से प्राप्त होने वाली अच्छी से अच्छी वस्तु का भी गाँधीवाद परित्याग कर देता है।
9. **सत्याग्रह:** गाँधीवाद में सत्य पर अटल रहने की नीति पर बल देता है। गाँधीवादी में इतना नैतिक साहस होना चाहिए कि वह विरोधों के बावजूद सत्य का आग्रह कर सके। गाँधी जी के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन कैसे वर्तमान पीढ़ी समाज और राष्ट्र के लिए फलदायी साबित होगा। गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करेगा।

अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता:

1. प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित शोध अगर भविष्य में कोई शोधकर्ता प्राप्त करता है तो यह शोध उसे मदद करेगा।
2. यह शोध शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में शिक्षण कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

3. यह शोध बच्चों में मौलिक चिंतन करने की क्षमता का विकास करेगा।
4. यह शोध भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को आगे ले जाने में मदद करेगा।
5. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन से संबंधित अगर कोई शोध करता है तो उसे शोध कार्य में मदद करेगा।

निष्कर्ष:

गाँधीजी केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। इनके शब्दों में 'साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ। यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है।' गाँधीजी मनुष्य को शरीर, मन, हृदय और आत्मा का योग मानते थे। इनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा को मनुष्य के शरीर, मन, हृदय और आत्मा का विकास करना चाहिए। वही सच्ची शिक्षा है जो स्वतन्त्रता का मार्ग-दर्शन कराती है। केवल वही उच्च शिक्षा है जो हमें अपने धर्म का संरक्षण करने के लिए समर्थ बनाती है। गाँधीजी के अनुसार शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा का काम छोटा नहीं है, क्षणिक नहीं है, वह तो समग्र जीवनव्यापी है। यह कोई शास्त्र की बात नहीं है, जीवन की बात है, आचार-व्यवहार की बात है, भावना और श्रद्धा की बात है। इसके लिए जीवन-सर्वस्व अर्पण करना होगा। अखंड कर्मयोग साधना पड़ेगा। ज्ञानयोग और ध्यानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग सबका समन्वय करके इसमें से जीवनयोग प्रकट करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा का अर्थ ही राष्ट्र निर्माण है। स्वभाव से मैं सत्यवादी था, पर अहिंसक नहीं था। सत्य की उपासना करते-करते ही मुझे अहिंसा हाथ लगी है।

महात्मा गाँधी जी के राय और शिक्षा के प्रति नीति का एक नाम है नई तालीम। इसका मतलब है, सब के लिए बेहतर शिक्षा। गाँधी जी ने समझा कि लोगों की अपनी मातृभाषा में पढ़ाई (अध्यापन) होना चाहिए। इससे बच्चे पढ़कर अपने परिवार के सदस्यों को भी पढ़ा सकते हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। आदमी में सम्पूर्णता की उन्नति। हर विद्यार्थी को बुद्धि में विकास के साथ साथ नीति संहिता, नैतिक अभिवृत्ति, शारीरिक विकास जरूरी है। सिर्फ पाठ्य पुस्तक में मूल-पाठ काफी नहीं। बच्चे स्वतंत्र हो कर, किसी दबाव में न होकर सीखना चाहिए उनके सोच विचार में स्वतंत्रता होना चाहिए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह 21 वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. एस. के. अग्रवाल : शिक्षा के तात्विक सिद्वांत पृ0-265.
2. पी. डी. पाठक एवं जी. एस. त्यागी, शिक्षा के दार्शनिक सिद्वांत, पृ0-8.
3. एन. आर. स्वरूप सक्सेना, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्वांत, पृ0-219.
4. बारबरा साउथर्ड फेमिनिज्म ऑफ महात्मा गाँधी', गाँधी मार्ग वॉल्यूम 13 ए नं.71, अक्टूबर 1981, पृ0 403
5. हिन्द-स्वराज्य, अध्याय 18, शिक्षण, इंडियन ओपिनियन, 18-12-1909 (सम्पूर्ण गांधी वांगम्य,) खण्ड 10, अप्रैल 1964, संस्करण।
6. आईडियल रिसर्च रिव्यू, पटना, मार्च 13, वाल्यू 37 अंक-1, पृ. 59